3

यीशु, स्वर्गदूत और हम

(1:4-14)

इब्रानियों 1:4 को हम संक्षेप में पहले ही देख चुके हैं जो कहता है कि यीशु ''स्वर्गदूतों से उत्तम'' है। शेष अध्याय यीशु और स्वर्गदूतों की तुलना करता है और इस वचन में हमारे लिए संदेश है।

स्वर्गदूत

लोग सदा से स्वर्गदूतों की ओर आकर्षित होते रहे हैं कि वे कौन हैं, क्या करते हैं आदि। इब्रानियों की पुस्तक कई बार स्वर्गदूतों की बात करती है। हमारे वचन पाठ के हवालों के अलावा अध्याय 2 में फिर से स्वर्गदूतों का विषय मिलता है (आयतें 2, 5, 7, 9, 16)। पुस्तक के अन्तिम भाग में दो संकेत हैं (12:22; 13:2)।

स्वर्गदूतों के बारे में पुस्तक की और दिलचस्प बातों में से एक 1:14 में है: ''क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं, जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?'' संक्षेप में स्वर्गदूत मसीही लोगों के सेवक किस प्रकार से हैं, हमें बताया नहीं गया। किसी न किसी तरह वे अपने बच्चों के लिए परमेश्वर की सम्भाल में शामिल होते हैं।

यीशु और स्वर्गदूत

स्वर्गदूतों का विषय चाहे जितना भी आकर्षित करने वाला हो पर स्वर्गदूतों को यीशु से मिलाया नहीं जा सकता; हमारा वचन पाठ इसी बात पर ध्यान दिलाता है। लेखक ने यह साबित करने के लिए कि मसीह स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है एक ही तर्क दिया कि *पवित्र शास्त्र* ऐसा कहता है। 1:4-14 में मुख्यतया भजनसंहिता की पुस्तक से पुराने नियम के सात हवाले दिए गए हैं। इन हवालों में मिलने वाला एक विचार यह है कि यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह *पुत्र* है जबकि वे *सेवक* हैं। लेखक की सोच पर ध्यान दें:

(1) यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है, क्योंकि उसे *परमेश्वर के पुत्र के रूप में बताया गया है, जबकि स्वर्गदूतों को नहीं* (आयतें 4, 5)। भजन संहिता 2:7 उद्धृत किया जाता है और फिर 2 शमूएल 7:14. परन्तु दोनों का सम्बन्ध दाऊद की वंशावली से हैं। दोनों का अन्तिम रूप में पूरा होना मसीह में पाया जाता है।

(2) यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है क्योंकि स्वर्गदूत उसकी आराधना करते हैं (छोटा बड़े की आराधना करता है)। आयत 6 का हवाला सप्तत्ति (LXX में) व्यवस्थाविवरण 32:43 से लिया गया है। व्यवस्थाविवरण का संदर्भ परमेश्वर की बात करता है पर लेखक इस वचन को यीशु पर लागू करने से हिचकिचाया नहीं, जो ''[परमेश्वर] के तत्व की छाप है'' (इब्रानियों 1:3)।

(3) यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है क्योंकि *स्वर्गदूत चाहे जितने भी बड़े हों, पर उनके बड़े होने को पुत्र की शान से नहीं मिलाया जा सकता, जो सब पर सदा तक राज करता है* (आयतें 7-9)। स्वर्गदूतों पर वचन (आयत 7) भजन संहिता 104:4 के सप्तत्ति अनुवाद से लिया गया है। पुत्र पर वचन (आयतें 8, 9) ''शाही भजन'' (भजन संहिता 45:6, 7) से लिया गया है जिसका अन्तिम रूप में पूरा होना यीशु में मिलता है।

(4) यीशु स्वर्गदूत से श्रेष्ठ है *क्योंकि वह सब वस्तुओं का सनातन सृष्टिकर्त्ता है* (आयतें 10-12); (संकेत से) इसके विपरीत स्वर्गदूत सृष्टिकर्त्ता नहीं, बल्कि सृष्टि हैं। यह हवाला भजन संहिता 102:25-27 से लिया गया है जो परमेश्वर के लिए कहा गया था, पर जिसे लेखक ने यीशु के लिए लागू किया, जिसके द्वारा परमेश्वर से संसार को बनाया (इब्रानियों 1:2)।

(5) यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है क्योंकि *यीशु राज कर रहा है जबकि स्वर्गदूत उसके अधीन सेवक हैं* (आयतें 13, 14)। भजन संहिता 110:1 को यह साबित करने के लिए दोहराया गया है कि यीशु सिंहासन पर है, जबकि यह तथ्य कि स्वर्गदूत सेवा करने वाले (अर्थात सेवक) हैं, स्पष्ट रूप में समझ आने वाला माना जाता है। (स्वर्गदूतों से मसीह की श्रेष्ठता की चर्चा 2:1-4 की शिक्षा के बाद, 2:5 में जारी रहती है।)

यीशु, स्वर्गदूत और हम

लेखक ने अपनी पहली बात में स्वर्गदूतों के ऊपर यीशु की श्रेष्ठता क्यों बताई, और इससे हमारा क्या सम्बन्ध है? 2:1-4 में लेखक ने इसका तथ्य भी व्यावहारिक प्रासंगिकता बनाई कि यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है (विशेषकर देखें आयतें 2 और 3), परन्तु यहां कुछ अतिरिक्त विचार करना उपयोगी हो सकता है।

यहूदी लोग स्वर्गदूतों से आकर्षित होते थे और अनुमान लगाते थे कि स्वर्गदूतों का संगठन क्या है। कुछ आरम्भिक मसीही भी स्वर्गदूतों के विषय से मोहित होते थे। स्पष्टतया कुछ तो स्वर्गदूतों की पूजा भी करते थे (कुलुस्सियों 2:18; देखें प्रकाशितवाक्य 19:10; 22:8, 9)। शायद इब्रानियों के लेखक का पहले स्वर्गदूतों पर मसीह की श्रेष्ठता की बात करना अध्याय 1 की पहली आयत से सम्बन्ध है: ''परमेश्वर ने बाप-दादाओं से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से ... बातें कीं।'' इन में से एक ढंग स्वर्गदूतों के द्वारा संदेश देना था। अगले अध्याय की आयत 2 स्वर्गदूतों को पुराने नियम के प्रकाशन से जोड़ती है। यदि यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है, तो वह जो उसने प्रकट किया है (1:2) उससे श्रेष्ठ है जो उन्होंने किया था।

इस तथ्य के अलावा कि यीशु की नई वाचा पुरानी वाचा से श्रेष्ठ है (इब्रानियों की पुस्तक का मख्य विषय) क्या हमारे लिए इसमें कोई संदेश है? लोग आज भी स्वर्गदूतों से आकर्षित होते हैं। वास्तव में वे किसी भी बात से जो भाग्य से जुड़ी अद्भुत अजीब या अनोखी हो, मोहित होते हैं। हमारे वचन पाठ से एक निष्कर्ष यह है कि हमें अपनी नज़रों से यीशु को हटाने की अनुमति किसी भी व्यक्ति या वस्तु को नहीं देनी चाहिए। *वही* है जिसका हमें आदर, सम्मान करना चाहिए और आज्ञा माननी चाहिए! *वही* है, जो हमें तसल्ली और प्रोत्साहन देता है!